

वैज्ञानिक विधि द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए

पहल

दक्षिण बिहार के अधिकांश क्षेत्र में कृषक बंधु धान-गेहूँ फसल चक्र को मुख्य रूप से अपनाते हैं जो कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में अहम भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में कंबाइन्ड हार्वेस्ट से धान फसल कटनी के उपरांत पराली का प्रबंधन एवं समय से गेहूँ की

बुआई मुख्य चुनौती रहती है। इसके समस्या के निदान/प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक, नीति निर्धारक, कृषि विभाग व किसान लगातार प्रयास कर रहे हैं। फसल अवशेष प्रबंधन व जागरूकता हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना के निदेशक डॉ० अनूप दास के मार्गदर्शन में जलवायु अनुकूल कृषि परियोजना के अंतर्गत वैज्ञानिकों का एक दल जिसमें डॉ० रोहन कुमार रमण, डॉ० रचना दूबे एवं डॉ० देवकरन द्वारा बक्सर जिले के ऊड़ी, पकड़ी, बसुधर, बिझौड़ा एवं कुकुड़ा गांव का भ्रमण



ऊड़ी, बक्सर ग्राम के किसान को फसल अवशेष प्रबंधन पर जागरूक करते हुए।



बसुधर, बक्सर ग्राम के किसान को फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी देते हुए।

एवं सर्वेक्षण 30 किसानों के प्रक्षेत्र पर दिनांक 22 दिसंबर 2023 किया गया

सर्वेक्षण में अधिकांश किसानों ने पराली जलाने का मुख्य कारण इनके प्रबंधन की तकनीकी जानकारी का अभाव होने के साथ-साथ पराली जलाने के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता की कमी, प्रबंधन यंत्रों की अनुपलब्धता, लंबी अवधि धान प्रभेद का प्रयोग, श्रमिकों का अभाव, असमय वर्षा, आदि घटकों को प्रमुख कारण बताया।

सर्वेक्षण के दौरान ही वैज्ञानिकों ने अवशेष प्रबंधन हेतु कृषि यंत्र जैसे हैप्पी सीडर, सुपरसीडर, स्ट्रॉ चॉपर व पैडी स्ट्रॉ बेलर के प्रयोग की तकनीकी जानकारी से किसानों को अवगत कराया। साथ ही फसल अवशेष से कम्पोस्ट खाद, केचूआ खाद, पशुचार, मशरूम उत्पादन में उपयोग एवं लाभ की विस्तृत



पकड़ी, बक्सर ग्राम के किसान को पैडी स्ट्रॉ बेलर ब्लॉक के उपयोग की जानकारी देते हुए।

जानकारी देकर किसानों को जागरूक किया। सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषि यांत्रिकरण योजनाओं की भी विस्तृत जानकारी किसानों को दी गई।